बोर्ड परीक्षा 2025

अर्थशास्त्र (ECONOMICS)

MOST IMPORTANT QUESTION - ANSWER

TOP 20

परीक्षा में ऐसे ही प्रश्न पूछे जाते है

प्रश्न 1. केंद्रीय बैंक की साख नियंत्रित की मौद्रिक नीतियों का उल्लेख करे।

उत्तर:- केंद्रीय बैंक द्वारा साख नियंत्रित करने के लिए प्रयोग किये गए उपकारों को दो वर्गों में बनता गया है-

1.परिमाणात्मक साख नियंत्रण

2.चयनात्मक साख नियंत्रण

परिमाणात्मक साख नियंत्रण-

I) बैंक दर नीति - बैंक दर वह है जिस पर केंद्रीय बैंक सदस्य बैंकों के प्रथम श्रेणी के व्यापारिक बिलों की पुन: कटौती करता है और उन्हें ऋण देता है। साख के विस्तार करने के उद्देश्य से बैंक दर को घटा दिया जाता है जबकि साख नियंत्रण के लिए बैंक दर को बढ़ा दिया जाता है ।

II) खुले बाजार की क्रियाएं: खुले बाजार की क्रियाओं से अभिप्राय केंद्रीय बैंक के द्वारा मुद्रा बाजार में सरकारी प्रतिभूतियो का क्रय विक्रय करना है । साख के नियंत्रण के प्रतिभूतियों का विक्रय किया जाता है जबकि साख के विस्तार के लिए क्रय किया जाता है ।

III) नकद कोष अनुपात नीति (CRR): देश का प्रत्येक व्यपैक बैंक अपनी कुल जमाओं का एक निश्चित प्रतिशत केंद्रीय बैंक के पास अनिवार्य रूप से करना पढ़ता है उसे नकद कोष अनुपात कहते है। साख के विस्तार करने के उद्देश्य से नकद कोष अनुपात को घटा दिया जाता है जबकि साख नियंत्रण के लिए नकद कोष अनुपात को बढ़ा दिया जाता है ।

IV) सांविधिक तरलता अनुपात (SLR): प्रत्येक व्यापारिक बैंक को अपनी कुल जमाओं का एक निश्चित प्रतिशत स्वयं के पास तरल रूप में जमा रखना पढता है जिसे सांविधिक तरलता अनुपात कहते है । साख के विस्तार करने के उद्देश्य से सांविधिक तरलता अनुपात को घटा दिया जाता है जबकि साख नियंत्रण के लिए सांविधिक तरलता अनुपात को बढ़ा दिया जाता है ।

चयनात्मक साख नियंत्रण-

I) सीमांत आवश्यकताओं या मार्जिन में परिवर्तन - जब विशेष वस्तु के लिए साख का संकुचन करना होता है तो केंद्रीय बैंक उसकी मार्जिन आवश्यकता को बढ़ा देता है और इसके विपरीत साख के विस्तार के लिए मार्जिन आवश्यकता को घटा देता है।

II) साख की राशनिंग :- केंद्रीय बैंक साख की राशनिंग चार प्रकार से करता है -

- विभिन्न बैंकों को दिए जाने वाले ऋण में कमी कर सकता है ।
- विभिन्न बांको को दी जाने वाली साख का कोटा निश्चित कर सकता है ।
- किसी विशेष बैंक को रुपया उधर देने से इंकार कर देता है ।
- केंद्रीय बैंक उद्योगों और व्यवसायियों को दी जाने वाली साख की सीमा निश्चित कर सकता है ।

III) प्रत्यक्ष कार्यवाही :- जब केंद्रीय बैंक यह देखता है कि कोई बैंक उसकी नीति के विरुद्ध कार्य कर रहा है तो वह प्रत्यक्ष कार्यवाही जैसे आर्थिक दंड लगाना, लाइसेंस निरस्त करना आदि कर सकता है ।

प्रश्न 2. व्यावसायिक बैंक की परिभाषा दीजिये। इसके प्रमुख कार्यों का वर्णन कीजिये।

उत्तर:- **व्यावसायिक बैंक :-**

व्यापारिक बैंक वह संस्था है जो जनता से जमाओं को स्वीकार करती करती है तथा उनके मांगे पर लौटाती है साथ ही जनता के लिए ऋणों की व्यवस्था भी करती है।

व्यापारिक बैंकों के कार्यों को तीन वर्गों में बांटा गया है -

व्यापारिक बैंकों के मुख्य कार्य - एक व्यापारिक बैंक के तीन मुख्य कार्य होते है -

I) **जमायें स्वीकार करना -** व्यापारिक का सबसे पहला कम जनता से जमाओं को स्वीकार करना होता है। और यह जमाये प्रमुखतः चार प्रकार के खातों में किया जाता जाता है - चालू खाता, बचत जमा, सावधि जमा खाता तथा आवर्ती जमा खाता।

II) **ऋण देना -** व्यापारिक बैंक का दूसरा मुख्य कार्य लोगो के मांगने पर उनके ऋण देना है। बैंकों के पास जो धन जमा के रूप में आता है उसमे से एक निश्चित राशि रखकर बाकि राशि ऋण के रूप में बाँट देती है। एक बैंक निम्न प्रकार के ऋण उपलब्ध कराती है - नकद साख, अधिविकर्ष, ऋण एवं अग्रिम, विनिमय पत्रों की कटौती तथा सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश।

III) **साख निर्माण -** वर्तमान समय में साख का निर्माण करना व्यापारिक बैंकों का प्रमुख कार्य बन गया है।

व्यापरिक बैंकों के गौण कार्य :- व्यापारिक बैंकों के गौण कार्यों को दो भागों में बांटा गया है -

- **एजेंट के रूप में कार्य**

1.विभिन्न मदों का एकत्रीकरण एवं भुगतान

2.अपने ग्राहकों के आदेश पर प्रतिभुतियों की खरीद एवं बिक्री करना

3.धन का प्रेषण करना

4.ग्राहकों के लिए ट्रस्टी एवं ,प्रवन्धक का कार्य करना

5.विदेशी मुद्रा का क्रय विक्रय करना

- **समान्य उपयोगिता के रूप में कार्य**

1.लाकर की सुविधा देना

2.ATM कार्ड, क्रेडिट कार्ड की सुविधा

3.व्यापारिक सूचनाओं का एवं आंकड़ों का एकत्रीकरण करना

प्रश्न 3. उदासीन वक्र से आप क्या समझते हैं। तटस्थता वक्र की सहायता से उपभोक्ता के संतुलन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: ***उदासीन वक्र:*** उदासीनता वक्र वह वक्र है जिसका प्रत्येक बिंदु दी वस्तुओं के ऐसे संयोगों को बताता है जिससे किसी उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्राप्त होती है

तटस्थता वक्र की सहायता से उपभोक्ता के संतुलन

एक उपभोक्ता उस समय संतुलन की अवस्था में होता है जब अपनी सीमित आय आय की सहायता से वास्तुओं को उनकी दी गई कीमतों पर खरीदकर अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करता है । इस कीमत रेखा के साथ उपभोक्ता ऊँचे से ऊँचे उदासीनता वक्र तक पहुँचने का प्रयास करता है ।

उदासीनता वक्र विश्लेषण में उपभोक्ता के संतुलन की शर्ते है -

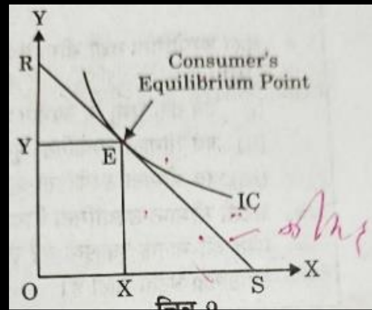

1.उदासीनता वक्र कीमत रेखा को स्पर्श करें -

अर्थात मात्रात्मक रूप में X वस्तु की Y वस्तु के लिए सीमांत प्रतिस्थापन दर X और Y वस्तुओं की कीमतों के अनुपात के बराबर होनी चाहिए ।

MRSxy = Px / Py

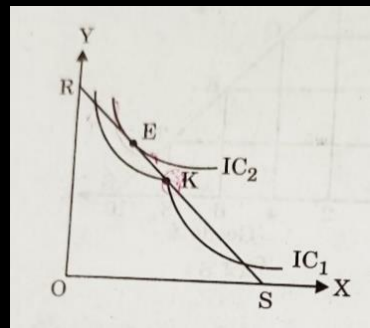

2. **स्थायी संतुलन के लिए संतुलन बिंदु पर उदासीनता वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर होनी चाहिए ।** अर्थात संतुलन बिंदु पर MRS घटती हुई होनी चाहिये ।

प्रश्न 4. पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत किसी वस्तु की कीमत का निर्धारण किस प्रकार होता है? एक उदाहरण और चित्र की सहायता से समझाइए।

उत्तर: . **मार्शल** के अनुसार एक पूर्ण प्रतियोगिता बाजार किसी वस्तु के मूल्य निर्धारण वस्तु के मांग पक्ष और पूर्ति पक्ष के द्वारा होता है। उनके अनुसार मांग पक्ष उपभोक्ता से संबंधित होता है , जो कम से कम कीमत पर अधिक मात्रा खरीदना चाहता है जबकि पूर्ति पक्ष उत्पादक से संबंधित है जो अधिक से अधिक कीमत पर ज्यादा मात्रा बेचना चाहता है।

इस प्रकार बाजार में जिस बिंदु या कीमत पर उपभोक्ता वस्तु को खरीदने और उत्पादक उसे बेचने के लिए तैयार हो जाये उसे संतुलन मूल्य कहा जाता है।

अर्थात जिस बिंदु पर वस्तु की मांग और वस्तु की पूर्ति दोनों बराबर हो उस बिंदु पर बस्तुं का मूल्य निर्धारित हो जाता है।

संतुलन कीमत → वस्तु की मांग = वस्तु की पूर्ति

उदहारण :-

कीमत (₹)	मांग (D)	पूर्ति (S)
2	100	20
4	80	40
6	60	60
8	40	80
10	20	100

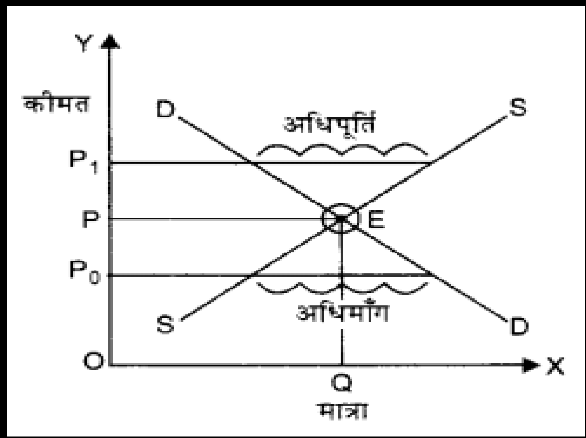

प्रश्न 5. मांग की लोच से आप क्या समझते है? इसकी विभिन्न श्रेणियों का सचित्र वर्णन कीजिये ।

उत्तर:- वस्तु की कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन के कारण वस्तु की मांग की मात्रा में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन के बीच आनुपातिक सम्बन्ध को मांग की कीमत लोच कहा जाता है ।

मांग की लोच की पांच प्रमुख श्रेणियां होती है :-

1. **सापेक्षता लोचदार मांग (Ed > 1) :-** जब वस्तु की कीमत में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप वस्तु की मांग में उससे अधिक परिवर्तन होता है, तो उसे सापेक्षता लोचदार मांग कहते है ।

वस्तु की कीमत में प्रतिशत परिवर्तन < वस्तु की मांग में प्रतिशत परिवर्तन

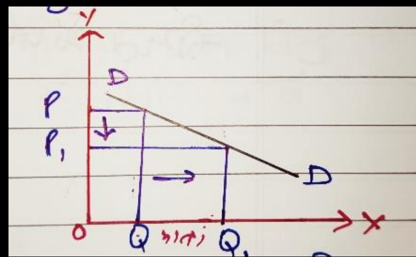

2. **सापेक्षता बेलोचदार मांग (Ed < 1):-** जब वस्तु के कीमत में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप वस्तु की मांग में उससे कम परिवर्तन होता है, तो उसे सापेक्षता बेलोचदार मांग कहते है ।

वस्तु की कीमत में प्रतिशत परिवर्तन > वस्तु की मांग में प्रतिशत परिवर्तन

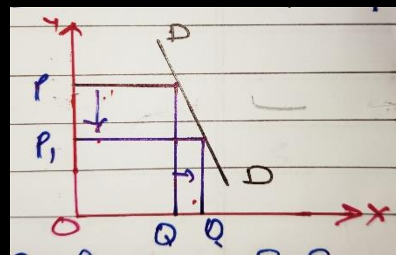

3. **इकाई लोचदार मांग (Ed=1):-** जब वस्तु के कीमत में होने वाले परिवर्तन के समान ही वस्तु की मांग में परिवर्तन होता है, तो उसे इकाई लोचदार मांग कहते है ।

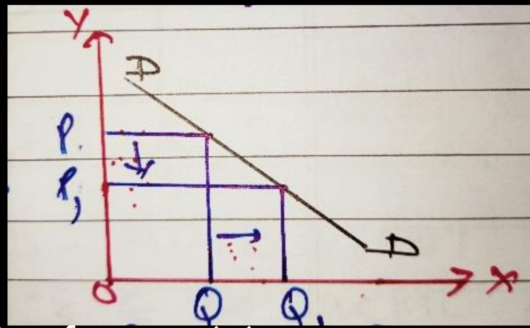

अर्थात,

वस्तु की कीमत में प्रतिशत परिवर्तन = वस्तु की मांग में प्रतिशत परिवर्तन

4. **पूर्णत: लोचदार मांग (Ed = infinitive):-** जब वस्तु की कीमत में परिवर्तन न होने या बहुत कम परिवर्तन होने पर भी वस्तु की मांग में अधिक परिवर्तन होता है तो उसे वस्तु की पूर्णतया लोचदार मांग कहते है ।

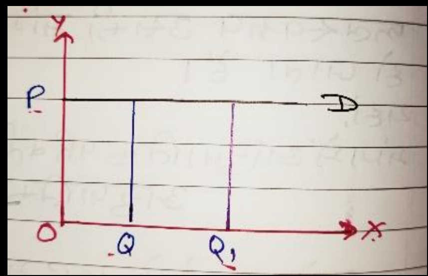

अर्थात,

इस स्थिति में कीमत में परिवर्तन = 0

मांग में परिवर्तन = अधिक

5. **पूर्णत: बेलोचदार मांग :-** वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर भी जब वस्तु की मांग में कोई परिवर्तन न हो उसे पूर्णतया बेलोचदार मांग कहते है ।

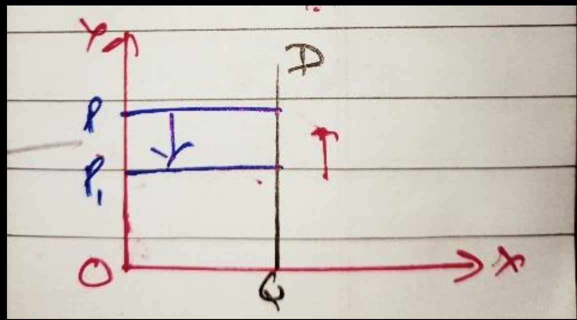

अर्थात,

इस स्थिति में कीमत में परिवर्तन = अधिक

मांग में परिवर्तन = शुन्य

प्रश्न 6. उत्पादन लागत से आप क्या समझते हैं? कुल लागत, स्थिर लागत तथा परिवर्तनशील लागत का अर्थ समझाइए?

उत्तर:

"अर्थशास्त्र में उत्पादन लागत का अर्थ उन सभी भुगतानों से है जो उत्पादन दर व्यय किये गये हैं। उत्पादन लागत में न केवल वित्तीय व्यय, बल्कि समय, सेवा तथा शक्ति के रूप में किये गये व्यय को भी सम्मिलित किया जाता है।

कुल लागत:

किसी फर्म को उत्पादन की एक निश्चित मात्रा उत्पादित करने के लिए जो कुल व्यय करना पड़ता है, उसे फर्म की कुल लागत कहा जाता है। उत्पादन में वृद्धि के साथ - साथ कुल लागतों में वृद्धि होती जाती है। कुल लागतों में सामान्यतः दो प्रकार की लागतें सम्मिलित की जाती हैं -

1. स्थिर या पूरक लागत तथा
2. परिवर्तनशील या प्रमुख लागत

कुल लागत = स्थिर लागत + परिवर्तनशील लागत।

1. स्थिर या पूरक लागत:

स्थिर लागत से तात्पर्य, उत्पत्ति के स्थिर साधनों पर किये जाने वाले व्यय से होता है। ऐसे साधनों पर किया जाने वाला व्यय उत्पादन के सभी स्तरों पर समान रहता है। स्थिर लागतों को पूरक लागतें, ऊपरी लागते, सामान्य लागतें एवं अप्रत्यक्ष लागतें भी कहते हैं।

स्थिर लागतों के अन्तर्गत निम्नलिखित लागतों को सम्मिलित किया जाता है -

1. फर्म की बिल्डिंग का किराया
2. स्थिर पूँजी एवं दीर्घकालीन ऋण पर ब्याज
3. बीमा शुल्क
4. मशीनों का घिसावट व्यय

2. परिवर्तनशील या प्रमुख लागत:

परिवर्तनशील लागतों से अभिप्राय, ऐसे व्ययों से है, जो उत्पत्ति के परिवर्तनशील साधनों पर किये जाते हैं। उत्पत्ति के परिवर्तनशील साधन ऐसे साधनों को कहा जाता है, जिन्हें उत्पादन में परिवर्तन होने पर परिवर्तन करना पड़ता परिवर्तनशील लागत को प्रमुख लागत एवं प्रत्यक्ष लागत भी कहा जाता है।

अल्पकालीन परिवर्तनशील लागतों में निम्न लागतें सम्मिलित की जाती हैं -

1. कच्चे माल का मूल्य
2. श्रमिकों की मजदूरी
3. ईंधन एवं विद्युत् शक्ति की लागते
4. परिवहन लागत
5. उत्पादन कर एवं बिक्री कर इत्यादि।

प्रश्न 7. केंद्रीकृत योजनावद्ध अर्थव्यवस्था तथा बाजार अर्थव्यवस्था के भेद को स्पष्ट कीजिये ।

उत्तर : केंद्रीकृत योजनावद्ध अर्थव्यवस्था तथा बाजार अर्थव्यवस्था के भेद:-

बाजार अर्थव्यवस्था	केंद्रीकृत योजनावद्ध अर्थव्यवस्था
बाजार अर्थव्यवस्था एक स्वतंत्र अर्थव्यवस्था है और केंद्रीय समस्याओं का समाधान कीमत तंत्र द्वारा होता है ।	केंद्रीकृत योजना वद्ध अर्थव्यवस्था सरकारी नियंत्रण वाल अर्थव्यवस्था है। केंद्रीय समस्याओं का संधान सरकारी अ से होता है ।
संपत्ति पर निजी स्वामित्व का अधिकार तथा संपत्ति की कोई सीमा नहीं होती है ।	संपत्ति के स्वामित्व पर उच्चतम सीमा लगे जा सकती है तथा निजी स्वामित्व सर्कार की देखभाल में होता है ।
उत्पादन की प्रक्रिया में सरकार की प्रत्यक्ष सहभागिता नहीं होती है ।	उत्पादन की प्रक्रिया में सरकार की प्रत्यक्ष सहभागिता ह है ।
उत्पादन प्रकिया का मुख्य उद्देश्य लाभ अधिकतम करना है ।	उत्पादन प्रकिया का मुख्य उद्देश्य सामाजिक कल्याण क अधिकतम करना है ।
अर्थव्यवस्था का विकास बाजार शक्तियों पर निर्भर करता है ।	अर्थव्यवस्था का विकास योजनावद्ध कार्यक्रमों के अनुरू होता है ।
विभिन्न निजी फर्मों के बीच गला काट प्रतियोगिता होती है।	इसमें प्रतियोगिता जैसी कोई चीज नहीं होती है ।

प्रश्न 8: फर्म के संतुलन का क्या अर्थ है? फर्म के संतुलन की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये?

उत्तर:

फर्म के साम्य या संतुलन से आशय-फर्म के संतुलन से आशय उस अवस्था से है जिसमें परिवर्तन की अनुपस्थिति दृष्टिगोचर होती है। फर्म के साम्य के आधार पर किसी फर्म के द्वारा वस्तु के मूल्य निर्धारण एवं उत्पादन की मात्रा का निर्धारण किया जाता है साम्यावस्था में उत्पादन की मात्रा में कमी या वृद्धि से फर्म का कोई सारोकार नहीं होता है। यही कारण है कि फर्म को इस अवस्था में अधिकतम लाभ प्राप्त होता है। अतएव वह बिंदु जिस पर फर्म को अधिकतम मौद्रिक लाभ प्राप्त हो उसे फर्म का संतुलन कहते हैं। जहाँ TR - TC अधिकतम हो।

फर्म के संतुलन की विशेषताएँ– फर्म के संतुलन की अवस्था की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. वस्तु की कीमत या उत्पादन की मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं:

संतुलन की स्थिति में फर्म अपनी कीमत या वस्तु के उत्पादन की मात्रा में किसी भी प्रकार की कोई परिवर्तन नहीं करती है अर्थात् परिवर्तन की अनुपस्थिति रहती है।

2. अधिकतम लाभ प्राप्त करना:

एक फर्म अपने संतुलन की स्थिति में अधिकतम लाभ प्राप्त करती है। अत: वह किसी भी प्रकार का जोखिम नहीं उठाना चाहती है।

3. फर्म की उत्पादन लागत न्यूनतम होना:

फर्म के संतुलन की स्थिति में फर्म न्यूनतम लागत पर उत्पादन को संभव बनाती है। उत्पादन लागत न्यूनतम हो जाने से लाभ बढ़ जाता है।

4. कुल लागत एवं कुल आगम तथा सीमांत विश्लेषण रीति का प्रयोग:

फर्म की साम्यावस्था कुल लागत एवं कुल आगम तथा सीमांत विश्लेषण रीति का प्रयोग करके प्राप्त की जा सकती है। एक फर्म के साम्य में उत्पादित वस्तु की मात्रा एवं कीमत निर्धारण में कोई अन्तर नहीं है।

प्रश्न 9: राष्ट्रीय आय क्या है? राष्ट्रीय आय की बुनियादी अवधारणाओं को समझाए।

उत्तर: एक देश की घरेलू सीमा में रहने वाले सभी सामान्य निवासियों द्वारा अर्जित सभी साधन आयों तथा विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय के योग को राष्ट्रीय आय कहते है।

राष्ट्रीय आय की बुनियादी अवधारणाएं:-

बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDPmp): एक देश को घरेलू सीमा में उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के बाजार मूल्य को सकल घरेलू उत्पाद कहते है।

बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNPmp): एक अर्थव्यवस्था में एक लेखवर्ष में उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के मौद्रिक मूल्य के योग से है जिसमे विदेशों से प्राप्त अर्जित आय सम्मिलित रहती है।

GNPmp= GDPmp + NFIA

बाजार कीमत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNPmp): बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद में से मूल्य ह्रास घटाने पर प्राप्त राशि को बाजार कीमत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद कहते है।

NNPmp= GNPmp - मूल्य ह्रास

बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDPmp): बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद में से मूल्य ह्रास घटाने पर बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद प्राप्त होता है।

NDPmp = GDPmp - मूल्य ह्रास

साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDPfc): किसी देश को घरेलू सीमा में सभी उत्पादकों द्वारा एक लेखा वर्ष में उत्पादन के विभिन्न साधनों से प्राप्त आय (साधन आय) के योग को साधन लागत lar शुद्ध घरेलू उत्पाद कहते है।

NDPfc = NDPmp - अप्रत्यक्ष कर + आर्थिक सहायता

साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDPfc): साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद में मूल्य ह्रास जोड़ने पर साधन एलजी पर सकल घरेलू उत्पाद प्राप्त होता है।

GDPfc = NDPfc + मूल्य ह्रास

साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNPfc): किसी देश के घरेलू आय (NDPfc) में मूल्य ह्रास तथा विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय को जोड़ने से साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद कहते है।

GNPfc = NDPfc + मूल्य ह्रास + NFIA

साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (राष्ट्रीय आय): देश के घरेलू आय तथा विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय के योग को राष्ट्रीय आय कहते है।

NNPfc = NDPfc+ NFIA

प्रश्न 10: अनैच्छिक बेरोजगारी से क्या तात्पर्य है? इसके विभिन्न कारणों की व्याख्या कीजिये।

उत्तर:- एक ऐसी स्थिति जिसमे ऐसे लोग जो कुशल तथा योग्य होते है और एक न्यूनतम मजदूरी दर पर कार्य करने के इच्छुक भी होते है किन्तु उन्हें काम नही मिलता है, अनैच्छिक बेरोजगारी कहते है। यह स्थिति काम के आभाव के कारण उत्पन्न होती है।

अनैच्छिक बेरोजगारी के कारण :-

1. **जनसँख्या विस्फोट :** जनसँख्या में होने वाली अत्याधिक वृद्धि के कारण सबकी उसी अनुपात में रोजगार दे पाना संभव नहीं होता है।
2. **शिक्षा की दयनीय स्थिति :** वर्तमान शिक्षा प्रणाली से लोग केवल नौकरी करना चाहते है लेकिन मेहनत करना नहीं चाहते है।
3. **कुटीर उद्योगो का ह्रास:** अधुनिकीकरण के नाम पर कुटीर उद्योगों का नष्ट होना भी बेरोजगारी का बहुत बड़ा कारण है।
4. **मशीनीकरण :** उद्योगों में मशीनों का प्रयोग होने तथा कंप्यूटर के प्रयोग से भी बेरोजगारी बड़ी है।
5. **पूंजी में कमी :** भारत में पूंजी निर्माण की दे बहुत धीमी होने के कारण भी बेरोजगारी बड़ी है।

प्रश्न 11: प्रत्यक्ष कर और अप्रत्यक्ष कर क्या है ? प्रत्येक के दो दो उदहारण दीजिये ।

उत्तर:-

प्रत्यक्ष कर (Direct Tax) : वे कर जिनका विवर्तन संभव न हो अर्थात करदाता दुसरे व्यक्तियों पर इसे स्थान्तरित नहीं कर सकते है, प्रत्यक्ष कर कहलाते है । इस स्थिति में कर की देयता तथा तथा द्रव्य भार और कर की बाह्यता दोनों ही एक ही व्यक्ति पर पड़ते है । आय कर,संपत्ति कर,उत्तराधिकार कर, निगम कर आदि प्रत्यक्ष कर के उदहारण है ।

अप्रत्यक्ष कर: वे कर है जिनके भार को करदाता दूसरों पर टालने में सफल हो जाते है । इन करो का तात्कालिक और अंतिम भार अलग अलग व्यक्तियों पर पड़ता है । अर्थात जिस पर कर भार होता है और कर का वास्तविक भुगतान करने वाला दोनों ही अलग अलग व्यक्ति होते है। जैसे वस्तु एवं सेवा कर (GST), आयत - निर्यात कर आदि अप्रत्यक्ष करो के ही उदहारण है ।

प्रश्न 12: उपभोक्ता संतुलन से आप क्या समझते है ? उपभोक्ता संतुलन की मान्यताएं और दशाएं स्पष्ट करें ।

उत्तर:- उपभोक्ता संतुलन एक ऐसी स्थिति है जिसमे एक उपभोक्ता आपनी आय को किसी वस्तु पर इस प्रकार व्यय करता है जिससे उसे प्राप्त होने वाली संतुष्टि अधिकतम होती है ।

इस प्रकार उपभोक्ता संतुलन संतुलन से अभिप्राय अधिकतम संतुष्टि के बिंदु से है जब एक उपभोक्ता अपनी दी हुई आय को विभिन्न वस्तुओं पर व्यय करता है ।

उपभोक्ता संतुलन की मान्यताएं-

I) उपभोक्ता विवेकशील है और वह सदैव ही दी हुई परिस्थिति में अपनी संतुष्टि को अधिकतम करने का प्रयास करता है ।

II) उपभोक्ता की मौद्रिक आय में कोई परिवर्तन न हो।

III) उपभोक्ताओं की रूचि और आदत में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए ।

IV) उपभोक्ता अपनी आय उन दो वस्तुओं पर व्यय करता है जो एक दुसरे की प्रतिस्थापक हो ।

V) किसी वस्तु की अधिक मात्रा सदैव उपभोक्ता को अधिक संतुष्टि प्रदान करती है ।

उपभोक्ता संतुलन की दशाएं :-

I) जब केवल एक ही वस्तु का उपभोग होता है - जब वस्तु की कीमत उसकी सीमांत उपयोगिता के मौद्रिक मूल्य के बराबर हो।

II) जब दो वस्तुओं का उपभोग होता है - वस्तु X पर खर्च किये गए प्रत्येक रुपये की सीमांत उपयोगिता वस्तु Y पर खर्च किये गए प्रत्येक रुपये की सीमांत उपयोगिता के बराबर हो ।

प्रश्न 13: पूर्ण प्रतियोगिता को परिभाषित कीजिए। क्या पूर्ण प्रतियोगिता काल्पनिक है?

उत्तर:

पूर्ण प्रतियोगिता की परिभाषा:

श्रीमती जॉन रॉबिन्सन के अनुसार, *"पूर्ण प्रतियोगिता तब पायी जाती है, जब प्रत्येक उत्पादक के उत्पादन के लिए माँग पूर्णतया लोचदार होती है। इसका अर्थ यह है कि प्रथम, विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है जिससे किसी एक विक्रेता को उत्पादक का उत्पादन उस वस्तु के कुल उत्पादन का एक बहुत ही थोड़ा– सा भाग प्राप्त होता है तथा दूसरे सभी क्रेता प्रतियोगी विक्रेताओं के बीच चुनाव कराने की दृष्टि से समान होते हैं, जिससे कि बाजार पूर्ण हो जाता है।"*

क्या पूर्ण प्रतियोगिता काल्पनिक है:

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की एक काल्पनिक दशा है, क्योंकि

1. क्रेताओं एवं विक्रेताओं का बड़ी संख्या में न होना:

   पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की एक ऐसी दशा है जिसमें क्रेताओं एवं विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है, लेकिन व्यावहारिक जगत में यह बात सही नहीं है, क्योंकि कुछ वस्तुओं के उत्पादक सीमित होते हैं जबकि उपभोक्ताओं की संख्या अधिक होती है।"

2. वस्तु का समरूप न होना:

पूर्ण प्रतियोगिता के लिए यह आवश्यक शर्त है कि वस्तुएँ समरूप होनी चाहिए, लेकिन व्यवहार में ऐसा नहीं होता। प्राय: हम जिन वस्तुओं का उपभोग करते हैं वे सब वस्तुएँ आकारप्रकार तथा गुणों में एक – दूसरे के समान नहीं होती हैं।

3. फर्मों का स्वतंत्र प्रवेश तथा बहिर्गमन न होना:

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में यह शर्त रहती है कि कोई भी फर्म, उद्योग में प्रवेश कर सकती है तथा उद्योग से बहिर्गमन कर सकती हैं लेकिन व्यवहार में सरकारी हस्तक्षेप के कारण ऐसा नहीं होता है।

4. बाजार का पूर्ण ज्ञान न होना:

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में यह शर्त रहती है कि क्रेताओं एवं विक्रेताओं में निकट का सम्पर्क होता है, लेकिन व्यावहारिक जगत में क्रेताओं एवं विक्रेताओं को इस बात की जानकारी नहीं रहती कि कौन – सी वस्तु कहाँ तथा किस कीमत में बेची या खरीदी जा सकती है।

5. उत्पत्ति के साधनों में पूर्ण गतिशीलता न होना:

उत्पत्ति के साधन पूर्ण प्रतियोगिता में पूर्ण गतिशील होते हैं, यह मान्यता भी गलत है।

6. परिवहन लागतों का शून्य होना संभव नहीं:

वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाने ले जाने में परिवहन व्यय भी होते हैं। अतः परिवहन लागतों का शून्य होना संभव नहीं है।

प्रश्न 14. बजट के उद्देश्यों को लिखिए?

उत्तर: सरकार बजट के माध्यम से निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये प्रयास करती है –

1. संसाधनों का पुनः आबंटन:

कई बार बाहरी शक्तियाँ संसाधनों के कुशलतम आबंटन में विफल रहती है। सरकार बजट के माध्यम से राष्ट्र के संसाधनों को सामाजिक व आर्थिक हितों के अनुरूप पुनः आबंटित करने का प्रयास करती है।

2. आय एवं सम्पत्ति का पुनः वितरण:

सरकार बजट के माध्यम से देश में आय एवं सम्पत्ति की विषमताओं को कम करने के लिए उनके पुनः वितरण का प्रयास करती है। इसके लिए सरकार अमीरों पर ऊँचे कर लगाकर निर्धन वर्ग के लोगों के कल्याण पर व्यय करती है।

3. आर्थिक स्थिरता:

सरकारी बजट का एक उद्देश्य देश में आर्थिक स्थिरता बनाए रखना भी है। सरकार मूल्यों में उतार – चढ़ाव रोकने और अर्थव्यवस्था में आय व रोजगार के ऊँचे स्तर से प्राप्त करने के उद्देश्य से कार्य करती है।

4. सार्वजनिक उद्यमों का प्रबंध:

सरकार सार्वजनिक उद्यमों के माध्यम से व्यावसायिक गतिविधियों का संचालन करती है। कुछ उद्योग जैसे- रेलवे, विद्युत् उत्पादन आदि ऐसे हैं जिन पर सरकारी एकाधिकार सामाजिक कल्याण की दृष्टि से आवश्यक माना जाता है।

प्रश्न 15: घटती सीमांत उपयोगिता के नियम की व्याख्या कीजिये ।

उत्तर:- घटती सीमांत उपयोगिता के नियम के अनुसार, जैसे जैसे किसी वस्तु की एक समान इकाइयों का उपयोग बढता जाता है उससे मिलने वाली सीमांत उपयोगिता घटती जाती है।

इस नियम का प्रतिपादन **ऑस्ट्रिया के अर्थशास्त्री एच एच गोशेन** ने किया था, अत: इस नियम को गोशेन का प्रथम नियम भी कहा जाता है ।

प्रो. मार्शल के अनुसार. " अन्य बातें समान रहने पर, किसी व्यक्ति के पास किसी वस्तु की मात्रा में वृद्धि होने से जो अतिरिक्त लाभ प्राप्त होता है, वह उस वस्तु की प्रत्येक इकाई की वृद्धि के साथ साथ घटता जाता है ।"

घटती सीमांत उपयोगिता के नियम के लागू होने की आवश्यक शर्तें:-

1. उपभोग की जाने वाली वस्तु की सभी इकाइयां गुण तथा परिणाम में समान रहनी चाहिए ।
2. उपभोग निरंतर क्रम में होना चाहिए ।
3. वस्तु की इकाई का आकार पर्याप्त होना चाहिए ।
4. उपभोक्ता के व्यवहार में परिवर्तन नही होना चाहिए।
5. उपभोक्ता की आय, रूचि, आदत और फैशन में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

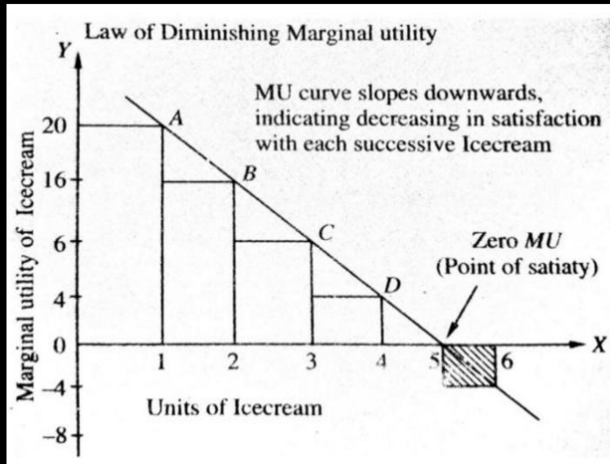

प्रश्न 16. पैमाने के प्रतिफल का क्या अर्थ है ? पैमाने के बढ़ते, स्थिर एवं घटते प्रतिफल को समझाइए।

उत्तर:- **पैमाने के प्रतिफल का अर्थ -** पैमाने के प्रतिफल उत्पादन फलन की दीर्घकालीन प्रवृत्ति को सूचित करते हैं। दीर्घकाल में कोई उत्पत्ति का साधन स्थिर नहीं रहता। सभी उत्पत्ति के साधन परिवर्तनशील हो जाते हैं तथा उन्हें आवश्यकतानुसार परिवर्तित भी किया जा सकता है। सभी उत्पत्ति साधनों के परिवर्तनशील होने के कारण उत्पादन का पैमाना (Scale of Production) परिवर्तित किया जा सकता है।

इस प्रकार पैमाने के प्रतिफल की तीन अवस्थाएँ होती हैं:

a. पैमाने के बढ़ते प्रतिफल (Increasing Returns to Scale):

जब सभी उत्पत्ति के साधनों को एक निश्चित अनुपात में बढ़ाया जाता है तब पैमाने के बढ़ते प्रतिफल के अन्तर्गत उत्पादन उस निश्चित अनुपात से अधिक अनुपात में बढ़ जाता है। इस प्रकार यदि उत्पत्ति साधनों को 10% बढ़ाया जाता है तो उत्पादन में 10% से अधिक की वृद्धि होती है।

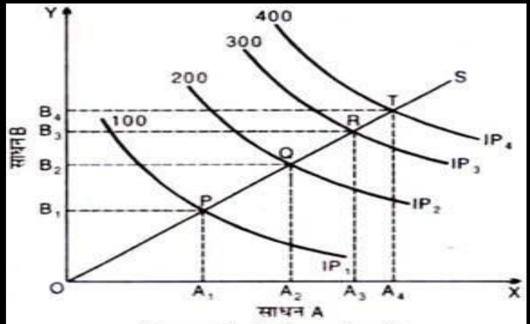

चित्र 1 पैमाने के बढ़ते प्रतिफल

b. पैमाने के स्थिर प्रतिफल (Constant Returns to Scale):

इसके अनुसार यदि उत्पत्ति के समस्त साधनों को एक निश्चित अनुपात में बढ़ाया जाये तो उत्पादन भी उसी निश्चित अनुपात से बढ़ता है। इस प्रकार यदि उत्पत्ति साधनों में 10% वृद्धि की जाती है तो उत्पादन भी 10% बढ़ता है। इसी प्रकार जिस अनुपात में उत्पत्ति साधनों में कमी की जाती है, ठीक उसी अनुपात में उत्पादन में भी कमी हो जाती है।

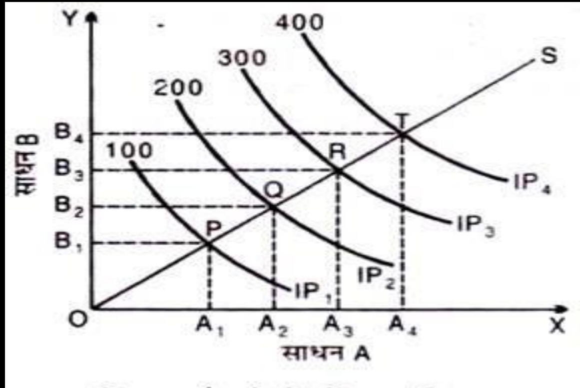

चित्र 2 पैमाने के स्थिर प्रतिफल

c. पैमाने के ह्रासमान प्रतिफल (Decreasing Returns to Scale):

इसके अनुपात उत्पत्ति के साधनों को जिस अनुपात में बढ़ाया जाता है उससे कम अनुपात में उत्पादन में वृद्धि होती है। दूसरे शब्दों में, उत्पादन में एक समान वृद्धि प्राप्त करने के लिए साधनों की क्रमशः अधिकाधिक मात्राओं की आवश्यकता होगी।

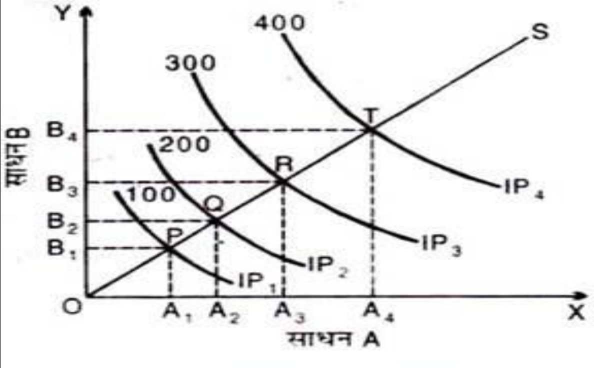

चित्र 3 पैमाने के घटते प्रतिफल

प्रश्न 17: एक वस्तु बाजार की बाजार मांग को प्रभावित करने वाले तत्वों को बताएं ।

उत्तर: एक वस्तु बाजार की बाजार मांग को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व इस प्रकार है -

1. **वस्तु की कीमत :** किसी वस्तु की मांग उसकी कीमत पर निर्भर करती है । वस्तु की कीमत बदने पर उसकी मांग घट जाती है और इसके विपरीत कीमत घट जाने पर वस्तु की मांग बढ जाती है ।
2. **संबंधित वस्तुओं की कीमतें :** संबंधित वस्तुओं की कीमतें बदने या घटने पर वस्तु की मांग भी प्रभावित होती है ।
3. **उपभोक्ता की आय :** उपभोक्ता की आय और वस्तु की मांग का प्रत्यक्ष संबंध होता है अर्थात उपभोक्ता की आय बदने पर वस्तु की मांग भी बढती है ।
4. **उपभोक्ता की रूचि :** किसी वस्तु की मांग उपभोक्ता की रूचि , आदत से भीं प्रभावित होती है ।
5. **ऋतू में परिवर्तन :-** ऋतू परिवर्तन के साथ ही मांग बदल जाती है जैसे ठण्ड के मौसम ममे गर्म कपड़ो को मांग बढ जाती है ।
6. **जनसँख्या में परिवर्तन :** जनसँख्या के घटने या बदने से वस्तु मांग घटती या बढती रहती है ।

प्रश्न 18. अति या अधिक की मांग क्या होती है? इसके प्रमुख कारणों की विवेचना कीजिये।

उत्तर: **अतिरेक या अत्यधिक मांग (Excess Demand)**

यदि अर्थव्यवस्था में ***सामूहिक मांग (AD)*** एवं ***सामूहिक पूर्ति (AS)*** में संतुलन अपूर्ण रोजगार स्तर के बाद होता है तो यह अतिरिक्त या अत्यधिक मांग की स्थिति होती है।

अन्य शब्दों में,

अतिरिक्त मांग तक उत्पन्न होती है जब सामूहिक मांग पूर्ण रोजगार स्तर पर सामूहिक पूर्ति से अधिक होती है।

अतिरेक मांग

AD > AS

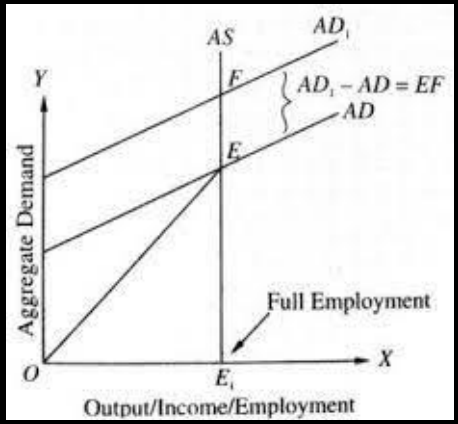

किसी भी देश में अतिरिक्त मांग की स्थिति निम्नलिखित कारणों से उत्पन्न हो सकती है:

- सार्वजनिक व्यय में वृद्धि के कारण सरकार द्वारा की जाने वाली वस्तुओं व सेवाओं की मांग में वृद्धि।
- करों में कमी के परिणामस्वरूप व्यय योग्य आय एवं उपभोग मांग में वृद्धि।
- हीनार्थ प्रबंधन के फलस्वरूप मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि।
- साख विस्तार से मांग में वृद्धि।
- विनियोग मांग में वृद्धि।
- उपभोग प्रवृत्ति में वृद्धि के फलस्वरूप का उपभोग मांग में वृद्धि।
- निर्यात के लिए वस्तुओं की मांग में वृद्धि।

प्रश्न 19. भुगतान शेष में असंतुलन को ठीक करने के किन्हीं चार उपायों को लिखिए।

उत्तर: भुगतान संतुलन को ठीक करने के उपाय निम्न है-

1. ***आयातों में कमी तथा आयात प्रतिस्थापन***

भुगतान असन्तुलन की स्थिति को सन्तुलित रखने के लिए सबसे पहले आयातों में कमी तथा आयात प्रतिस्थापन पर बल देना चाहिए। जो आयात हमारे देश में किया जाता है वह केवल आवश्यक वस्तुओं का ही होता है। अतः इन वस्तुओं के आयात में एक निश्चित सीमा से अधिक कमी नहीं की जा सकती है क्योंकि इसका प्रतिकूल प्रभाव देश के जन जीवन पर पड़ता है।

2. ***निर्यात योग्य वस्तुओं की पहचान***

देश में उन वस्तुओं का उत्पादन अधिक किया जाए जिनके निर्यात की सम्भावनाये अधिक हो। इसके लिए विश्व बाजार या अन्तर्राष्ट्रीय बाजार का अध्ययन, करना आवश्यक है।

3. ***निर्यात क्षमता का विकास***

देश में निर्यात के विकास के लिए सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों के उपक्रमों को एक साथ

मिलाकर प्रयास करने चाहिए। जिन उद्योगों में निर्यात की संभावनाएं अधिक है, उन उद्योगों में निर्यात को आवश्यक व वैधानिक कर देना चाहिए।

4. ***निर्यातों के लिए सुविधाओं का विकास***

देश की निर्यात व्यवस्था इस ढंग की बनानी चाहिए कि जिससे निर्यातको को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। निर्यात के मार्ग में आने वाली सभी प्रशासनिक औपचारिकतायें एवं बाधाओं को न्यूनतम किया जाना चाहिए।

प्रश्न 20. कीन्स के सिद्धांतों की किन्ही छः आलोचनाएँ लिखिए।

उत्तर: कीन्स के रोजगार सिद्धांत की मुख्य आलोचनाएं इस प्रकार से है:

1. कीन्स के अनुसार एक अर्थव्यवस्था में सन्तुलन की स्थिति पूर्ण रोजगार से कम स्तर पर भी हो सकती है। अनेक अर्थशास्त्रियों ने कीन्स की इस धारणा की आलोचना की है।
2. कीन्स का रोजगार सिद्धांत एक अल्पकालीन विश्लेषण है। यह दीर्घकाल से सम्बन्ध नहीं रखता है।
3. कीन्स का रोजगार सिद्धांत पूर्ण प्रतियोगिता ही अवास्तविक धारणा पर आधारित है
4. कीन्स का रोजगार सिद्धांत एक सामान्य सिद्धांत नहीं है क्योंकि यह सिद्धांत प्रत्येक प्रकार की समस्या का न तो समाधान करता है और न ही प्रत्येक अर्थव्यवस्था में लागू होता है।
5. कीन्स का रोजगार सिद्धांत बन्द अर्थव्यवस्था की अवास्तविक मान्यता पर आधारित है।
6. कीन्स ने ब्याज की दर को केवल एक मौद्रिक घटना माना है। लेकिन हेन्सन, हिक्स आदि के अनुसार ब्याज की दर पर वास्तविक तथा मौद्रिक दोनों प्रकार के तत्वों का प्रभाव पड़ता है।
7. कीन्स के रोजगार सिद्धांत में त्वरक धारणा का अभाव है। इस कारण से कीन्स का सिद्धांत पूर्ण नहीं माना जा सकता।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

LIKE AND ***SHARE*** The Video

SUBSCRBE THE CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

FOLLOW ME ON INSTAGRAM / @theeconomicsguru

FOLLOW ME ON FACEBOOK / NAKUL DHALI

For PDF visit my website: www.theeconomicsguru.com